 ISSN - 2250-1991 | IF : 5.215 | IC Value : 77.65

Original Research Paper **Education**

सूक्ष्म–शिक्षण की आदेयता

दिव्या शर्मा | शोधकर्ति शिक्षा संकाय टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान।

KEYWORDS

सूक्ष्म शिक्षण अध्यापक प्रशिक्षण के क्षेत्र में एक नवीन आशा और उत्साह का प्रतीक बनकर शिक्षकों को छात्राध्यापकों को और शिक्षक–प्रशीक्षको को आज चुनौती भरे स्वरों में पुकार रहा है। सुक्ष्म–शिक्षण प्रशिक्षण–महाविद्यालय के लिए एक वरदान बनकर आया है, जिसके फलस्वरूप प्रशिक्षण हेतु आये छात्राध्यापकों में कक्षा–अध्यापन के कौशल के विकास की बात प्रारम्भ हो गयी है। सूक्ष्म–शिक्षण एक प्रकार की प्रयोगशाला विधि है जिसमें छात्राध्यापक शिक्षण कौशलों का अभ्यास बिना किसी को हानि पहुँचाये करते है। यह विधि प्रयोगशाला की सभी शर्तां की पूर्ति करने में सक्षम है।

शिक्षा आयोग (1964–66) के प्रतिवेदन का प्रथम वाक्य **Hkkjr d HkkX; dk fuek.k mldh d{kkvk e gk jgk gA** देश के भाग्य निर्माण से हमारी कक्षाओं का सीधा सम्बन्ध है। जो कुछ हमारी कक्षाओं में पढ़ाया जाता है और जिस प्रकार पढ़ाया जा रहा है उसका हमारे देश के भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

सूक्ष्म शिक्षण–अध्यापक व्यवहार में सुधार का एक तरीका

शिक्षण एक कौशल है। हमारे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य ऐसे योग्य एवं कौशलपूर्ण शिक्षकों को तैयार करना है जो कक्षा शिक्षण के उच्च स्तर को बना सकें। शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम के उपरोक्त व्यावहारिक एवं अर्थपूर्ण दोषों को दूर करने के लिए और शिक्षकों को उतम प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए अनेक खोजों, सूक्ष्म शिक्षण, कक्षा अन्तः प्रक्रिया अनुकरणीय शिक्षण (imulation) एवं अतिक्रमित अध्ययन आदि का विकास हुआ, सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching) विशेषतः भारत में मुख्य खोज है।

सूक्ष्म शिक्षण का अर्थः– माइक्रो अथवा सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ है लघु कक्षा, लघु पाठ अवधि तथा लघु पाठ्य–सामग्री से शिक्षण। सूक्ष्म शिक्षण एक ऐसी शिक्षक–शिक्षण विधि है जो कक्षा–अध्यापन की जटिलता और विस्तार को घटाकर उन्हें लघु रूप देती है और शिक्षण कौशलों एवं निपुणताओं के उन्नयन के लिए कार्य करती है। इसका प्रयोग शिक्षक प्रशिक्षाणर्थियों के व्यवहार–परिवर्तन के लिए भी किया जाता है। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में सूक्ष्म–शिक्षण एक नया आयाम है। इसमें आन्तरिक विशेषताओं पर दृष्टिपात करने को कहा जाता है। यह एक वैज्ञानिक तथा तकनीकी स्वरूप है। सूक्ष्म–शिक्षण एक वर्तमान तथा नवीन खोज है। यह शिक्षक तथा छात्राध्यापको के व्यवहार परिवर्तन की महत्वपूर्ण प्रविधि है। इसमें कक्षा के छोटे आकार को पढ़ाया जाता है समय, प्रकरण तथा कौशल का रूप भी छोटा कर लिया जाता है। इसके द्वारा विशिष्ट कौशल का विकास किया जाता है। यह शिक्षण की वास्तविक प्रक्रिया होती है। शिक्षकों को जो सेवा पूर्व (Pre-Service) अथवा अन्तः सेवा (In Service) gsrq आते हैं, इस प्रक्रिया द्वारा कम समय में शिक्षण कौशल का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। अतः सेवा शिक्षकों के शिक्षण प्रक्रिया में सुधार लाना भी इस प्रविधि–द्वारा सम्भव है। उनमें लम्बे समय 40–45 मिनट के पाठ पढ़वाना अवास्तविक एवं समय का दुरूपयोग है। इस हेतु सूक्ष्म शिक्षण बहुत ही सुविधाजनक एवं सफल प्रविधि अथवा प्रणाली है।

सूक्ष्म–शिक्षण चक्र& ¼**MICRO TEACHING Cycle) : -** सूक्ष्म–शिक्षण प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक छात्राध्यापक शिक्षण कौशल विशेष में निपुणता (डेंजमतल) न प्राप्त कर लें। शिक्षण, पृष्ठ–पोषणा, पुनः पाठ नियोजन, पुनः शिक्षण तथा पुनः पृष्ठ पोषण के पाँच पद क्रमों को मिलाकर एक चक्र–सा बन जाता है जो तब तक चलता रहता है जब तक उसे शिक्षण कौशल विशेष पर पूर्ण अधिकार (निपुणता) न प्राप्त हो जाये। यही चक्र सूक्ष्म शिक्षण–चक्र कहलाता है।

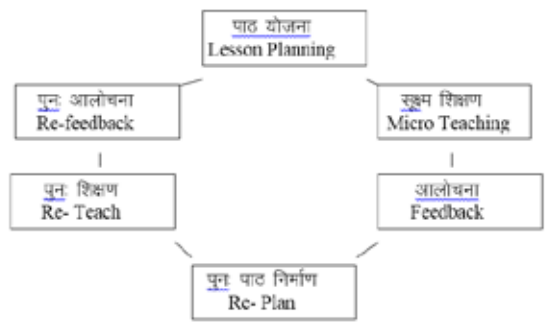

सूक्ष्म शिक्षण चक्र

सूक्ष्म शिक्षण का स्वरूपः– सूक्ष्म शिक्षण एक ऐसी सूक्ष्म परिस्थिति है जिसमें शिक्षण एक छोटा–सा शिक्षण बिन्दु लगभग 5 से 10 छात्रों के समुह को एक छोटे से 5–10 मिनट के कालांश में पढ़ाता है। इस प्रकार की परिस्थिति एक अनुभवी और बिना अनुभव वाले शिक्षण को नवीन शिक्षण कौशल के विकास एवं सुधार में काफी सहायता प्रदान करता हैं। सूक्ष्म शिक्षण एक ऐसी प्रविधि है जो प्रशिक्षणार्थी को पाठ की समाप्ति के तुरन्त बाद उसके कार्य की प्रगति के बारे में ज्ञान कर देता है।

सूक्ष्म शिक्षण एक ऐसी प्रयोगशाला प्रविधि है जिसमें रूढिवादी कक्षा शिक्षण की जटिलताओं को सरल कर दिया जाता है। सूक्ष्म शिक्षण में निम्नलिखित सोपान होते हैः–

1) छायाध्यापक को एक शिक्षा कौशल उदाहरण के लिए वर्णन करना प्रदर्शित करना या प्रश्न पूछना आदि में से किसी एक जिसका कि छात्राध्यापक को विकास करना है का ज्ञान उसके प्रशिक्षण के द्वारा कर दिया जाता है और उस पर आधारित पाठ का विकास कर दिया जाता है।

2) छात्राध्यापक उस छोटे पाठ को 5 से 10 छात्रों या अपने सहयोगी छात्रों को लगभग 5–10 मिनट तक पढ़ाता है। यह सोपान सूक्ष्म शिक्षण का 'शिक्षण' सोपान कहलाता है।

3) उपरोक्त पढ़ाये गये पाठ को पर्यवेक्षक या पर्यवेक्षकों के एक समूह के द्वारा एक विशेष रूप से विकसित मूल्यांकन प्रारूप की सहायता से पर्यवेक्षित कर दिया जाता है या सम्पूर्ण पाठ को ओडियो टेप या वीडियो टेप पर पाठ समाप्ति के पश्चात् मूल्यांकन के लिए रिकार्ड कर लिया जाता है।

4) शिक्षण की समाप्ति के पश्चात् छात्राध्यापको के साथ पर्यवेक्षक मूल्यांकन प्रोफार्मा या रिकार्ड की सहायता से पाठ पर विचार–विर्मश करता है। इस प्रकार पर्यवेक्षक द्वारा छात्राध्यापक को तुरन्त पृष्ठपोषण प्रदान कर दिया जाता है। यह सोपान पृष्ठपोषण सोपान कहलाता है।

5) पृष्ठपोषण के तुरन्त पश्चात् छात्राध्यापक सुझाये गये विचारों के आधार पर फिर पाठ को पुनर्योजित करता है। सूक्ष्म शिक्षण का यह सोपान पुनर्योजना सोपान कहलाता है।

6) पाठ के पुनर्योजन के पश्चात् पुनर्योजित पाठ को उसी के समान स्वर के दूसरे

समूह को पुनर्शिक्षण किया जाता है। सूक्ष्म शिक्षण का यह सोपान पुनर्शिक्षण सोपान कहलाता है।

7) पुनर्शिक्षण पाठ को पुनः पर्यवेक्षित किया जाता है और फिर उसके आधार पर छात्राध्यापक को फिर पाठ से सम्बन्धित विचार विर्मश किया जाता है तथा उसके आधार पर पृष्ठपोषण प्रदान किया जाता है। इस पृष्ठपोषण के आधार पर छात्राध्यापक पाठ को फिर नियोजित करता है।

8) उपरोक्त फिर से नियोजित पाठ को छात्राध्यापक समान स्तर के नवीन छात्रों के समुह को फिर से पढ़ाता है। पर्यवेक्षक पुनः पाठ का पर्यवेक्षण करता है और छात्राध्यापक उस विशेष कौशल में दक्षता प्राप्त कर लेता है।

सूक्ष्म शिक्षण के उपरोक्त सोपान एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है तथा सूक्ष्म शिक्षण के एक पूर्ण चक्र को प्रदर्शित करते है। यह चक्र तब तक चलता रहता है जब तक कि छात्राध्यापक निर्धारित कौशल के विकास में सफलता प्राप्त नहीं कर लेता है।

मुख्य रूप से सूक्ष्म शिक्षण में पृष्ठपोषण के मुख्य स्रोत निम्नलिखित हैः–

(क) ओडियो टेप (Aduio tape)
(ख) वीडियो टेप (Video tape)
(ग) विद्यालय पर्यवेक्षक (College Supervisor)
(घ) साथियों (Peers)
(ड) छात्र जो कि सूक्ष्म कक्षा का निर्माण करते है। (Pupils Who make up the micro class)
(च) पहले पाँचो का कोई भी संगठन (Any Combinatioin of the first five sources of feedback)
समयानुसार सुक्ष्म–शिक्षण के विभिन्न सोपानों को निम्नप्रकार से विभक्त करते हैः–

सूक्ष्म शिक्षण के गुण (Merits):–

1- शिक्षण सरल एवं भय रहित है।
2- सूक्ष्म शिक्षण के दौरान छात्रों की संख्या मात्र 5 से 10 होती है अतः यह कक्षा में अनुशासनहीनता की समस्या को जन्म नहीं देती है।
3- शिक्षक प्रशिक्षणार्थी स्पष्ट रूप से निश्चित व्यावहारिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ही अपने ध्यान को केन्द्रित रखता है।
4- सूक्ष्म शिक्षण में अधिक स्पष्ट एवं तथ्यात्मक पृष्ठपोषण का समावेश होता है जो कि छात्राध्यापक को उचित शिक्षण कौशल प्राप्त करने में सहायता देता है।
5- सूक्ष्म शिक्षण छात्राध्यापक के पाठ की समाप्ति के तुरन्त पश्चात् ही उसकी प्रगति के बारे मे ज्ञान करा देता है।
6- सूक्ष्म शिक्षण नियन्त्रित प्रयोगशाला एवं वास्तविक शिक्षण परिस्थिति दोनों ही उत्पन्न करती है।
7- सूक्ष्म शिक्षण में छात्राध्यापक तुरन्त उसी समय पाठ्य–वस्तु को पुनर्योजित एवं पुनर्शिक्षण करता है। अतः सुधार की गुंजाइश इसमें अधिक रहती है।
8- यह शिक्षण पद्धति स्वयं शिक्षण अभ्यास के लिए स्थान प्रदान करती है।

सूक्ष्म–शिक्षण के दोष (Demerits):-

1- इस शिक्षण की मुख्य कमी इसके लिए प्रशिक्षित प्रशिक्षकों का अभाव है।
2- सहयोगी साथियों की कक्षा–कक्षा शिक्षण के लिए वास्तविक परिस्थिति प्रदान नहीं कर सकती।
3- वास्तविक कक्षा के 30 छात्रों एवं सूक्ष्म शिक्षण की कक्षा में 5–10 छात्रों को पढ़ाने में एक गहरा अन्तर होता है। इसमे शिक्षणार्थी को कक्षा अनुशासनहीनता की वास्तविक समस्या से सामना नहीं हो पाता है।
4- वीडियो टेप की अनुपस्थिति कभी–कभी अभ्यास के दौरान गठन समस्या उत्पन्न कर देती है, क्योंकि वीडियो टेप छात्राध्यापक को Direct पृष्ठपोषण प्रदान करती है।
5- वर्तमान प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सूक्ष्म शिक्षण का प्रवेश धन की समस्या को जन्म देगा।
6- वर्तमान परिभाषा के अन्तर्गत सूक्ष्म शिक्षण सम्पूर्ण शिक्षक–प्रशिक्षण प्रणाली का स्थान लेने की क्षमता नहीं रखता है।

निष्कर्ष :– अन्त में यह कहा जा सकता है कि सूक्ष्म अध्ययन शिक्षक प्राशिक्षण महाविद्यालयों में छात्राध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए यह सबल साधन है जिसका प्रयोग अच्छे शिक्षक तैयार करने के लिए किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को सूक्ष्म–शिक्षण के विषय में सही ज्ञान तथा उसके वास्तविक प्रयोग हेतु उचित प्रशिक्षणकी व्याख्या करनी होगी, तभी यह विधि अधिक उपादेय सिद्ध हो सकेगी।

संदर्भसूचीः–

1- डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ–शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार–विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
2- शैलेन्द्र भूषण एवं डॉ0 अनिल कुमार वार्ष्णेय–शैक्षिक तकनीकी श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
3- डॉ0 बी0पी0 सिंह– शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्ध–सहित्य प्रकाशन, आगरा।
4- जे0सी0 अग्रवाल–शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा प्रबन्धन के मूल तत्व–श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
5- डॉ0 आर0 ए0 शर्मा–शिक्षा के तकनीकी आधार–आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।